दिवंगत आत्माओं से आशीर्वाद लेने का पर्व

पूर्वजों के धरती पर आने की मान्यता

श्राद्ध से जीवित रहती श्रद्धा
पितरों को प्रकट करें कृतज्ञता

श्राद्ध तर्पण अति पवित्र शुभ प्राचीन परंपरा है। इसमें देह त्याग के बाद भी जीवात्मा के विकास एवं परस्पर भावपूर्ण आदान-प्रदान की व्यवस्था है। वर्ष में पितृ पक्ष के 15 दिन इसी के कार्य के लिए नियत किए गए हैं। श्राद्ध शब्द का अर्थ श्रद्धापूर्ण व्यवहार से है, जबकि तर्पण का अर्थ तृप्त करना है। इस तरह श्राद्ध तर्पण का मतलब दिवंगत पितरों को तृप्त करने की श्रद्धा या समर्पण है। सबसे पहले पितृ पक्ष यानि श्राद्ध का उल्लेख महाभारत काल में मिलता है, जहां भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को श्राद्ध के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि महर्षि निमी को श्राद्ध का उपदेश देने वाले प्रथम व्यक्ति महा तपस्वी अत्री थे। उस उपदेश को सुनने के बाद महर्षि निमि ने श्राद्ध करना शुरू किया। उन्हें देखकर अन्य ऋषियों ने भी श्राद्ध शुरू कर दिया। लगातार श्राद्ध का भोजन प्राप्त करने से उनके सभी पूर्वज संतुष्ट रहने लगे।

भोजन पहले अग्निदेव फिर पूर्वजों को अर्पित करें

- ऋग्वेद के अनुसार, अग्नि मृतकों को पितृलोक तक पहुंचाने में सहायक होती है। श्राद्ध के दौरान अग्नि से प्रार्थना की जाती है कि वह वंशजों के दान और भोजन को पितृगणों तक पहुंचाकर मृतात्मा को भटकने से रक्षा करें। ऐतरेय ब्राह्मण में अग्नि का उल्लेख उस रज्जु के रूप में है जिसकी सहायता से मनुष्य स्वर्ग तक पहुंचता है। वहीं, पुराणों के अनुसार, पितृ पक्ष या श्राद्ध से मिल रहे भोजन से जब देवताओं और पूर्वजों को अपच हो गई, तो वह ब्रह्माजी के पास गए।
- ब्रह्माजी ने कहा कि अग्निदेव ही उनका कल्याण करेंगे क्योंकि अग्नि तत्व भोजन के पचाने के लिए बेहद जरूरी है। जब वो अग्निदेव के पास गए, तो अग्निदेव ने देवताओं और पूर्वजों से कहा कि अब से हम सभी श्राद्ध में एक साथ भोजन करेंगे। मेरे साथ रहने से तुम्हारा अपच दूर हो जाएगा, तब से श्राद्ध का भोजन पहले अग्निदेव फिर पूर्वजों को दिया जाता है। श्राद्ध में अग्निदेव को देखकर दैत्य और राक्षस भी भोजन दूषित नहीं कर पाते, और कभी हो भी जाये, तो अग्नि सब कुछ शुद्ध कर देती है।

इस दिन जरूर कराएं ब्राह्मण भोज

- धार्मिक शास्त्रों में श्राद्ध पूजा का सबसे अच्छा समय दोपहर को है। दोपहर के समय योग्य ब्राह्मणों की सहायता से मंत्रोच्चारण कर श्राद्ध पूजा करें। पूजा के बाद जल से तर्पण करें और भोजन में गाय, कुत्ते, कौवे आदि का भाग अलग करके पहले उन्हें खिलाएं। अगर संभव हो तो गंगा नदी के किनारे जाकर श्राद्ध कर्म करें। यह सर्वाधिक फलदायी होता है। ऐसा न कर पाएं तो घर पर भी विधिपूर्वक श्राद्ध कर सकते हैं। जिस दिन श्राद्ध करें, उस दिन ब्राह्मण भोज जरूर कराएं और उन्हें दान-दक्षिणा दें।

शाहजहां ने पत्र लिखकर औरंगजेब को धिक्कारा था

- श्राद्ध तर्पण की परंपरा को याद करके मुगल बादशाह शाहजहां अपने अंतिम यातना भरे दिनों में रोया था। क्रूर पुत्र औरंगजेब ने उसे जेल में बंद कर रखा था। शाहजहां ने मार्मिक पत्र लिखा था कि 'बेटा, तू कितना निर्दयी और विचित्र मुसलमान है, जो अपने जीवित पिता को बूंद-बूंद पानी के लिए तरसा रहा है, जबकि हिंदुओं की तरफ देख, जो अपने मृत पिता को भी पानी देते हैं। इस पत्र का उल्लेख आकिल खां की किताब वाके आलमगीरी में मिलता है।

पूर्वज की मृत्यु तिथि याद नहीं तो अमावस्या पर सर्वपितृ श्राद्ध

- ऐसी मान्यता है कि मृत्यु के बाद जीवात्मा चंद्रलोक से आगे पितृ लोक में पहुंचती है। मृतात्मा को अपने नियत स्थान तक पहुंचने की शक्ति प्रदान करने के लिए मरणोपरांत पिंडदान और श्राद्ध की व्यवस्था की गई है। श्राद्ध कर्म मृत्यु तिथि के आधार पर किया जाता है। जिस दिन व्यक्ति की मृत्यु हुई थी, पितृ पक्ष के उसी दिन उसका श्राद्ध किया जाता है। अगर किसी को अपने पूर्वज की मृत्यु तिथि याद नहीं है, तो वे अमावस्या के दिन सर्वपितृ श्राद्ध कर सकते हैं। यह तिथि उन सभी पितरों के लिए होती है जिनकी मृत्यु तिथि मालूम न हो।

लेखक
आचार्य पवन तिवारी
संस्थापक अध्यक्ष, ज्योतिष सेवा संस्थान

श्राद्ध कब से कब तक

पूर्णिमा	7 सितम्बर, रविवार
प्रतिपदा	8 सितम्बर, सोमवार
द्वितीया	9 सितम्बर, मंगलवार
तृतीया	10 सितम्बर, बुधवार
चतुर्थी	10 सितम्बर, बुधवार
पंचमी	11 सितम्बर, गुरुवार
षष्ठी	12 सितम्बर, शुक्रवार
सप्तमी	13 सितम्बर, शनिवार
अष्टमी	14 सितम्बर, रविवार
नवमी	15 सितम्बर, सोमवार
दशमी	16 सितम्बर, मंगलवार
एकादशी	17 सितंबर, बुधवार
द्वादशी	18 सितम्बर, गुरुवार
त्रयोदशी	19 सितम्बर, शुक्रवार
चतुर्दशी	20 सितम्बर, शनिवार
सर्वपितृ अमावस्या	21 सितम्बर, रविवार

बोध कथा

महिमा राधा नाम की

एक कुष्ठ रोगी अपने कुष्ठ रोग के कारण अत्यधिक परेशान रहता था। किसी ने उसे ब्रज भूमि जाने की सलाह दी, इस पर वह वृंदावन आ गया। यहां वह सड़क के किनारे बैठा रहता था, और हर आने जाने वाले व्यक्ति से अपना कुष्ठ रोग ठीक होने का उपचार पूछता रहता था। उसकी हालत देखने के बाद कोई कुछ दवाई बता कर चला जाता तो कोई कुछ उपचार बता देता। लेकिन धीरे-धीरे समय बीतता जा रहा था, और किसी के भी उपाय या उपचार से न तो उसका कुष्ठ रोग कम हुआ, न ही उसकी पीड़ा कम हुई। कुछ दिनों के पश्चात एक सरल हृदय बाबा उस मार्ग से गुजरे। कुष्ठ रोगी ने उनसे भी अपने इलाज की गुहार लगाई। बाबा उसकी दशा देखकर द्रवित हो गए। हाल-चाल पूछा और कहा कि तुम सारा दिन यहां बैठे-बैठे आने-जाने वाले लोगों से उपचार पूछते रहते हो। वृंदावन में आकर भी राधा रानी का नाम नहीं लेते हो। कल से अपने मुख से हर समय 'श्री राधे-श्री राधे' का उच्चारण किया करो। वही तुम्हारा कल्याण करेंगी। कुष्ठ रोगी ने बाबा की सलाह मानकर उसी समय से 'श्री राधे-श्री राधे' जपना शुरू कर दिया। अब वह आने-जाने वाले लोगों से भी श्री राधे-श्री राधे कहने लगा। यहां तक कि उसके घावों में जब बहुत पीड़ा होती थी, तब भी वह कराहने के बजाय करुण स्वर में 'श्री राधे-श्री राधे' ही कहता रहता। श्रीकृष्ण ने बृज की गलियों से गुजरते हुए कुष्ठ रोगी की करुण वेदनामयी आवाज में 'श्री राधे-श्री राधे' की पुकार सुनी, तो तुरंत दौड़े-दौड़े उसके पास पहुंचे। कुष्ठ रोगी के पास आकर श्रीकृष्ण को ऐसा प्रतीत हुआ मानो वहां कोई कुष्ठ रोगी न होकर साक्षात राधा रानी बैठी हैं। श्रीकृष्ण ने तुरन्त उस कुष्ठ रोगी को गले से लगा लिया और स्वयं भी भावविह्वल होकर राधे-राधे कहने लगे। तभी पीछे से राधा रानी बोलीं-'प्रभु मैं तो इधर खड़ी हूं उधर नहीं।' किन्तु भगवान को तो कुष्ठ रोगी में ही राधारानी दिख रहीं थीं। उन्होंने उसे ही मजबूती से पकड़े रखा और राधे-राधे कहते रहे। कुछ क्षणों के पश्चात जब श्रीकृष्ण ने आंखें खोली तो देखा कि राधा रानी तो वास्तव में उनके पीछे ही खड़ी थीं, किन्तु इतने ही क्षणों में भगवान की कृपा और स्पर्श मिलने से वह कुष्ठ रोगी पूरी तरह भला-चंगा और पूर्णतः स्वस्थ हो चुका था। यह कथा हमें सीख देती है कि जब पूर्ण श्रद्धा से कोई कार्य करते हैं तो सफलता जरूर मिलती है, भले ही वह किसी भी भगवान का नाम जप ही क्यों न हो। जब हम अपने इष्टदेव को पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ पुकारते हैं, तो वह हमारे दुख और कष्ट दूर करने जरूर आते हैं।

लेखक: राजपुरुष

!! धर्म का मर्म !!

मनुष्य को क्या करना चाहिए और क्या नहीं, इसके लिए शास्त्र ही प्रमाण हैं, क्योंकि वेद और शास्त्र स्मृतियां भगवान की आज्ञा हैं। सृष्टि संचालन के लिए ईश्वर को विधान बनाना पड़ता है, उसी शासन विधान का नाम शास्त्र है। विश्व संचालन की विद्या इन धर्म शास्त्रों में समाहित है।।।धर्मो विश्वास्य जगतः प्रतिष्ठा।। इस प्रकार धर्म और इसके शास्त्र शाश्वत हैं, सनातन हैं। यही सनातन धर्म संपूर्ण जगत का जीवन है। सूर्य में प्रकाश,अग्नि में दाहक शक्ति, चंद्रमा में शैतल्य,अमृत में अमृत्व,पृथ्वी में क्षमा, मानव में मानवता समेत विभिन्न धर्मों के रूप में यही एक सनातन धर्म अवस्थित है। यही सनातन धर्म सार्वभौम विश्व धर्म या आत्मधर्म है, जो आत्म कल्याणकारी होने के साथ साथ सर्वभूत हितमय है। विचारणीय बात यह है कि जीव पशु-पक्षी कीट-पतंगे तथा तिर्यक आदि 84 लाख योनि में भटकता हुआ भगवत्कृपा से मानव शरीर प्राप्त करता है। इस योनि में उसे कर्म करने का सामर्थ्य प्राप्त होता है, पर इस सामर्थ्य का वह कितना प्रयोग करता है, यह उस पर निर्भर है।

मानव जीवन स्वेच्छाचारिता पूर्वक भोग विलास में जीवन बिता दिया और शास्त्र रूपी भगवदाज्ञा के अनुसार जीवन चर्या नहीं चलाई तो पुनः समस्त तिर्यक योनि में दुख रूपी जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। मनुष्य आज पशुओं से भी निकृष्ट जीवन यापन कर रहा है। पशुओं को अपने धर्म का आहार आदि का बोध है, पर मनुष्य को नहीं । आप और कुछ बने न बनें, किंतु आप मानव बन गए तो आप धर्म शास्त्र पथ से भ्रष्ट नहीं होंगे। वास्तव में धर्म वह है जिसके परिणाम में अपना और दूसरों का हित होता है। अधर्म वह जिसमें अपना और दूसरों का अहित होता है।

परहित सरिस धर्म नहि भाई। पर पीड़ा सम नहि अधमाई।।

सत्य, सदाचार और परहित धर्म का मूल है। माता-पिता, पुत्र और पत्नी के धर्म अलग अलग है, पर सभी एक दूसरे का हित और परस्पर सुख पहुंचाने वाले ही होंगे।

।।निःस्वार्थता ही धर्म की कसौटी है।।

जो जितना निस्वार्थी है वो उतना ही आध्यात्मिक और धार्मिक है। आज संसार में अनैतिक आचार व्यवहार स्वार्थ की पराकाष्ठा है। धार्मिक संस्कार लुप्तप्राय हो रहे है। जिसमें सर्वत्र ही काम क्रोध लोभ मोह मद गर्व अभिमान, द्वेष, ईर्ष्या, हिंसा परोत्कर्ष पीड़ा दलबंदिया अधर्म युद्ध आदि सभी अधर्म के विभिन्न स्वरूपों का तांडव नृत्य हो रहा है। तो पता नहीं पतन कितना गहरा होगा। अतः मनुष्य धर्म शास्त्रों का आलंबन लेकर पाप पुण्य नीति अनीति की पहचान की सामर्थ्य प्राप्त कर सके तथा देव पितृ गुरु आदि के प्रति अपना कर्तव्य समझ सके यही धर्म का वास्तविक मर्म है।

लेखक
चन्द्रेश जी महाराज
(चंद्रदास)

सप्ताह के व्रत और पर्व

- 3 सितंबर : बुधवार – पार्श्व एकादशी
- 4 सितंबर : गुरुवार – वामन जयंती, शुक्र प्रदोष व्रत

- 5 सितम्बर, शुक्रवार – गणेश विसर्जन, अनंत चतुर्दशी पर्व
- 7 सितंबर, रविवार- प्रतिपदा श्राद्ध

- 6 सितम्बर, शनिवार – भाद्रपद पूर्णिमा व्रत, चंद्र ग्रहण
- 7 सितम्बर 2025 – रविवार – पितृ पक्ष आरंभ, प्रातिपदा श्राद्ध

अनंत सूत्र की 14 गांठें, 14 लोकों की प्रतीक

- अनंत चतुर्दशी पर्व भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना के लिए समर्पित है। इस दिन उनके अनंत रूपों की पूजा की जाती है। पूजा में चौदह गांठों वाला खास धागा, जिसे अनंत सूत्र कहते हैं, प्रयोग किया जाता है। ये धागा भगवान विष्णु के चौदह लोकों भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, ब्रह्मलोक, अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल लोक का प्रतीक है। अनंत सूत्र को पुरुष दाएं और महिलाएं बाएं हाथ पर बांधती हैं। मान्यता है कि इस रक्षा सूत्र को बांधने से सभी प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं और आरोग्य की प्राप्ति होती है।

जनकपुर के बिना अधूरी है अयोध्या

अयोध्या जितना ही धार्मिक महत्व नेपाल के जनकपुर धाम का भी है। पूर्वी नेपाल में बिहार बार्डर के समीप स्थित जनकपुर माता सीता का मायका है। इसे बिहार का मिथिलांचल भी कहते हैं। मिथिलांचल के लोग स्वयं को भगवान राम के ससुराल से जुड़ा महसूस करते हैं। यहां के लोगों का मानना है कि बिना जनकपुर के अयोध्या अधूरी है। जनकपुर धाम में हर रोज भजन-कीर्तन होने से पूरा इलाका भक्तिमय बना रहता है। पूरे कस्बे में हर घर पर राम पताका फहराती है। सड़क के किनारे हर हिंदू के घर का मुख्य हिस्सा भगवा रंग में रंगा है।

जनकपुर भगवान राम का ससुराल है। भगवान राम के प्राण प्रतिष्ठा के दिन मिथिला संस्कृति के अनुसार जनकपुर से माता सीता के ससुराल अयोध्या दो ट्रकों में भरकर सौगात भेजी गई थी। मान्यता है कि जब बेटी अपने ससुराल के नए घर में प्रवेश करती है, तो उसके मायके से कुछ सगुन भेजे जाते हैं।

राजा जनक के नाम पर हुआ नामकरण

अंग्रेजों के शासन के वक्त एक समझौते में नेपाल को मेची नदी के पूर्व और महाकाली नदी के पश्चिम के बीच का तराई क्षेत्र दिया गया था। इस तरह मिथिला का एक बड़ा भूभाग नेपाल में शामिल कर दिया गया, जनकपुर भी इसी क्षेत्र का हिस्सा था। राजा जनक के नाम पर इस शहर का नाम जनकपुर रखा गया था। राजा जनक की पुत्री सीता जिन्हें जानकी भी कहते हैं, उनके नाम पर इस मंदिर का नामकरण हुआ था। मंदिर में मां सीता की मूर्ति सन 1657 के आसपास की बताई जाती है।

कभी भारत का हिस्सा था जनकपुर

- जनकपुर धाम प्राचीन काल में विदेह राज्य की राजधानी थी। जनकपुर मंदिर साल 1911 में बनकर तैयार हुआ था। 4860 वर्ग फीट में फैले इस मंदिर का निर्माण टीकमगढ़ की महारानी कुमारी वृषभानु ने करवाया था। उनके कोई संतान नहीं था। यहां पूजा के दौरान उन्होंने मन्नत मांगी थी कि अगर उन्हें संतान होती है, तो यहां मंदिर बनवाएंगी। संतान की प्राप्ति के बाद महारानी वहां लौटीं और साल 1895 में मंदिर का निर्माण शुरू हुआ जो 16 साल में पूरा हुआ। उस समय मंदिर के निर्माण पर नौ लाख रुपये खर्च हुए थे, इसलिए इस मंदिर को नौलखा मंदिर भी कहते हैं। 1967 से इस मंदिर में 12 महीने अखंड कीर्तन चलता रहता है। 24 घंटे सीता-राम नाम का जाप लोग करते हैं।

अयोध्या से जनकपुर तक रामायण सर्किट

- अयोध्या और जनकपुर को जोड़ने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रामायण सर्किट का शुभारंभ किया है। जनकपुर धाम तक भारत से ट्रेन भी चलाई गई है। इसके लिए भारत से नेपाल का रेल समझौता हुआ है। कोंकण रेलवे कारपोरेशन, महाराष्ट्र ने 84 करोड़ 65 लाख रुपये कीमत की चार बोगी और इंजन समेत दो डीएमयू सवारी गाड़ी नेपाल को उपलब्ध कराई हैं।

लेखक
यशोदा श्रीवास्तव